❍ 07 / 10 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *स्वदर्शन चक्रधारी बन शंखध्वनि की ?*

➢➢ *किसी को भी अपना आधार तो नहीं बनाया ?*

➢➢ *सदा हुज़ूर को हाज़िर समझ साथ का अनुभव किया ?*

➢➢ *मन को सदा रूहानी मौज में रखा ?*

────────────────────────

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

〰✧ कर्मातीत अर्थात् कर्म के किसी भी बंधन के स्पर्श से न्यारे। ऐसा ही अनुभव बढ़ता रहे। *कोई भी कार्य स्पर्श न करे और करने के बाद जो रिजल्ट निकलती है उसका भी स्पर्श न हो, बिल्कुल ही न्यारापन अनुभव होता रहे। जैसे कि दूसरे कोई ने कराया और मैंने किया।* निमित्त बनने में भी न्यारापन अनुभव हो। *जो कुछ बीता, फुलस्टाप लगाकर न्यारे बन जाओ।*

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

———————————————

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

✺ *"मैं सदा हर्षित रहने वाली श्रेष्ठ आत्मा हूँ"*

〰✧ अपने को सदा हर्षित रहने वाली श्रेष्ठ आत्मा अनुभव करते हो? *हर्षितमुख, हर्षितचित। इसकी यादगार आपके यादगार चित्रों में भी दिखाते हैं। कोई भी देवी या देवता की मूर्ति बनायेंगे तो उसमें चेहरा जो दिखाते हैं, वह सदा हर्षित दिखाते हैं।*

〰✧ अगर कोई सीरीयस (गम्भीर) चेहरा होगा तो देवता का चित्र नहीं मानेंगे। *तो हर्षितमुख रहने का इस समय का गुण आपके यादगार चित्रों में भी है। हर्षितमुख अर्थात् सदा सर्वप्राप्तियों से भरपूर। जो भरपूर होता है वही हर्षित रह सकता है। अगर कोई भी अप्राप्ति होगी तो हर्षित नहीं रहेंगे।* कितनी भी हर्षित रहने की कोशिश करें, बाहर से हंसेंगे लेकिन दिल से नहीं।

〰✧ कोई बाहर से हंसते हैं तो मालूम पड़ जाता है-यह दिखावे का हँसना है, सच्च नहीं। *तो आप सब दिल से सदा मुस्कारते रहो। कभी चेहरे पर दु:ख की लहर न आये। किसी भी परिस्थिति में दु:ख की लहर नहीं आनी चाहिए क्योंकि दु:ख की दुनिया छोड़ दी, संगम की दुनिया में आ गये।*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

∫∫ 3 ∫∫ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ आप विदेश से आते हो तो बापदादा भी विदेश से आते हैं। *सबसे दूर-से-दूर से आते हैं लेकिन आते सेकण्ड में हैं।*

〰✧ आप सभी भी सेकण्ड में उडती कला का अनुभव करते हो? सेकण्ड में उड सकते हो? *इतने डबल लाइट हो, संकल्प किया और पहुँच गये।*

〰✧ *परमधाम कहा और पहुँचे, ऐसी प्रैक्टिस है?* कहाँ अटक तो नहीं जाते हो? कभी कोई बादल तंग तो नहीं करते हैं, केयरफुल भी हो और क्लियर भी, ऐसे है ना! (पार्टियों के साथ)

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∫∫ 4 ∫∫ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆
✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ ड्रिल बहुत अच्छी लग रही थी। यह रोज़ हर एक को करनी चाहिए। ऐसे नहीं हम बिजी हैं। *बीच में समय प्रति समय एक सेकण्ड चाहे कोई बैठा भी हो, बात भी कर रहा हो, लेकिन एक सेकण्ड उनको भी ड्रिल करा सकते हैं और स्वयं भी अभ्यास कर सकते हैं। कोई मुश्किल नहीं है। दो-चार सेकण्ड भी निकालना चाहिए इससे बहुत मदद मिलेगी। नहीं तो क्या होता है, सारा दिन बुद्धि चलती रहती है ना तो विदेही बनने में टाइम लग जाता है और बीच बीच में अभ्यास होगा तो जब चाहें उसी समय हो जायेंगे क्योंकि अन्त में सब अचानक होना है।* तो अचानक के पेपर में यह विदेही पन का अभ्यास बहुत आवश्यक है। ऐसे नहीं बात पूरी हो जाये और विदेही बनने का पुरुषार्थ ही करते रहें। तो सूर्यवंशी तो नहीं हुए ना। इसलिए जितना जो बिजी है, उतना ही उसको बीच-बीच में यह अभ्यास करना ज़रूरी है। फिर सेवा में जो कभी-कभी थकावट होती, कभी कुछ-न-कुछ आपस में हलचल हो जाती है, वह नहीं होगा। अभ्यासी होंगे ना। एक सेकण्ड में न्यारे होने का अभ्यास होगा, तो कोई भी बात हुई एक सेकण्ड में अपने अभ्यास से इन बातों से दूर हो जायेंगे। *सोचा और हुआ। युद्ध नहीं करनी पड़े। युद्ध के संस्कार, मेहनत के संस्कार सूर्यवंशी बनने नहीं देंगे। लास्ट घड़ी भी युद्ध में ही जायेगी, अगर विदेही बनने का सेकण्ड में अभ्यास नहीं है तो।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

────────────────────────

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)

(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- पावन बनाने की सेवा करना"*

➳ _ ➳ बारिश की बूंदों की छम-छम में जैसे मोर नाच रहा... वैसे ही ज्ञान सागर की वर्षा के सरगम में मुझ आत्मा का मन मयूर नाच रहा है... जन्म-जन्मान्तर के विकारों की तपन को बुझाकर... *ज्ञान वर्षा में नहलाकर प्यारे बाबा मुझे रूप-बसंत बना रहे हैं... ज्ञान कस्तूरी से सुगन्धित कर रहे हैं...*

❉ *प्यारे बाबा मुझे अपनी गोद में बिठाते हुए कहते हैं:-* "मेरे मीठे फूल बच्चे... देह के भान और देह के सम्बन्धो से उपराम बनो और आत्मा के तल पर आत्मिक भाव को अपनाओ... ईश्वरीय मत की ऊँगली थाम हर कर्म को यादो से महकाओ... और ऐसा ही सुंदर जीवन सबका बनाओ... *सबको कांटे से फूल बनने का सुंदर राज बताओ... पतितो को पावन बनाने का रास्ता बताओ..."*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा बाबा को गले लगाकर कहती हूँ:-* "हाँ मेरे मीठे प्यारे बाबा... मै आत्मा विकारी मत को छोड़... श्रीमत का हाथ थाम सुख भरी खुशनुमा जीवन जी रही हूँ... *और यही पावनता का रंग सबके जीवन में भी रंग रही हूँ... मीठी मीठी यादो में महक रही हूँ..."*

❉ *मीठे बाबा मुझे लाड करते हुए कहते हैं:-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... बहुत दुखो में जी चुके हो... अब विकारी मत को छोड़ ईश्वरीय साथ को थामो... यह श्रीमत ही सच्चा साथ निभाकर फूलो भरे बगीचे में ले जायेगी... स्वयं खिलकर औरो को भी खिलाओ... *सबका घर आँगन सच्ची खुशियो से खिलखिलाओ... उन्हें भी पावन राह पर ले आओ..."*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा बाबा के प्यार में मगन होकर कहती हूँ:-* "मेरे प्राणप्रिय बाबा... मै आत्मा अपनी मत और परमत में दिव्य गुणो को ही खो चुकी थी... *अब ईश्वरीय यादो में फिर से निखर रही हूँ... और अपने सत्य स्वरूप को पाकर पावनता की खशब से भर रही हूँ...* और सबको आनन्द से सराबोर कर

रही हूँ..."

❇ *मेरे बाबा प्यार से कहते हैं:-* "प्यारे सिकीलधे मीठे बच्चे... ईश्वरीय सन्तान हो खुशबूदार खिले फूल हो... तो अब रावण की मत पर चलकर विकर्मो के बोझों को और न बढ़ाओ... सिर्फ और सिर्फ श्रीमत की लकीर को अपनाओ... और खुबसूरत खुशियो के मालिक बनो... *अपने साथ साथ औरो के जीवन को भी पावन सुंदर बनाओ..."*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा ख़ुशी से कहती हूँ:-* "हाँ मेरे मीठे बाबा... मै आत्मा रावण की मत को सदा का त्याग कर... देह के भान से मुक्त होकर... खुशियो के सागर में... बाबा संग लहरा रही हूँ... *श्रीमत पर खूबसूरत हुए अपने जीवन को देख पुलकित सी झूम रही हूँ...* और मीठी खुशियो की खबर संसार में फैला रही हूँ..."

∫∫ 7 ∫∫ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- मात पिता को फॉलो करने का ऊंच पुरुषार्थ करना है*"

➳ _ ➳ मात पिता को फॉलो करने का दृढ़ संकल्प अपने मन मे ले कर मैं जैसे ही मम्मा बाबा के बारे में विचार करती हूं, मन बुद्धि से पहुंच जाती हूं उनकी कर्मभूमि मधुबन में जहां उनके हर कर्म का यादगार है। *अब मैं स्वय को उस स्थान पर देख रही हूं जहां मम्मा बाबा के मुखारविंद से मन को आलोकित, आनंदित और निर्मल करने वाले महावाक्य सुनने के लिए सभी ब्राह्मण आत्माएं एकत्रित हैं*।

➳ _ ➳ सामने संदली पर मम्मा बाबा आकर बैठ जाते हैं। दोनों दिव्य मूर्त, दोनों के मखमंडल पर पवित्रता की अनोखी झलक और दिव्य तेज स्पष्ट दिखाई

दे रहा है। *मम्मा बाबा दोनों मधुर मुस्कान से, स्नेह भरे नयनो से सबको निहार रहें हैं*। उनके आने का ढंग, बैठने की रीति, उनकी प्रीति, उनके निहारने की विधि बहुत ही न्यारी है। मैं इस दृश्य को देख मन ही मन अपने भाग्य की सराहना कर रही हूं।

➳ _ ➳ तभी शिव बाबा ब्रह्मा बाबा के साकारी तन में प्रवेश करते हैं। बाबा के प्रवेश होते ही ब्रह्मा बाबा के मुखमण्डल पर दिव्य तेज कई गुणा बढ़ जाता है और उनकी भृकुटि से शक्तिशाली प्रकंपन निकल कर पूरी क्लास में फैल जाते हैं। *क्लास में खुशी की लहर के साथ साथ मन को गहन शांति का अनुभव कराने वाला सन्नाटा छा जाता है*। सभी ब्राह्मण बच्चे बाप दादा को निहारते हुए, बाप दादा की मीठी दृष्टि लेकर स्वयं को भरपूर कर रहे हैं। बाप दादा सभी बच्चों को एक-एक करके अपने पास बुला रहे हैं, उन्हें मीठी दृष्टि देते हुए उन से मीठी मीठी रूह रिहान कर रहे हैं। *एक एक करके सभी बच्चे मात-पिता की अलोकिक गोद का दिव्य सुख और उनके पवित्र हाथों से टोली ले रहे हैं*।

➳ _ ➳ बापदादा अपने मधुर महावाक्यों से बच्चों को मीठी समझानी भी दे रहें हैं। सबको परमात्म मिलन का अलौकिक सुख प्रदान कर शिव बाबा अपने धाम लौट जाते हैं। *मम्मा सभी बच्चों से खुश - खैराफ़त पूछते हुए कह रही है, देखो बच्चे-"बाप दादा के घर आए हो सुख पाने के लिए*। कोई भी स्थूल सूक्ष्म सेलवेशन चाहिए हो तो बताना, किसी प्रकार की लज्जा नहीं करना।

➳ _ ➳ अब ब्रह्मा बाबा सभी बच्चों को ड्रिल कराते हुए कहते हैं - अच्छा बच्चे, अब बैठो अपने अति प्यारे शिव बाबा की याद में। अशरीरी हो जाओ और बुद्धि को ले जाओ परमधाम। *देखो तुम बैठे तो फर्श पर हो लेकिन तुम्हारी बुद्धि सदा अर्श अर्थात परमधाम में रहनी चाहिए*। देह और देह के सर्व सम्बन्धो से तोड़ निभाते हुए बुद्धि का योग केवल शिव बाबा के साथ लगा रहे यह अभ्यास हर समय करते रहो। बाबा के ऐसा कहते ही सभी आत्मिक स्थिति में स्थित हो जाते हैं और शिव बाबा की याद में अशरीरी हो कर बैठ जाते हैं।

➳ _ ➳ अशरीरी स्थिति में स्थित होते ही अब मैं आत्मा अपनी साकारी ब्राह्मण देह से निकल कर पहुंच जाती हूँ अपने पिता परमात्मा शिव बाबा के

पास परमधाम और उनके साथ कम्बाइंड हो कर उनकी सर्वशक्तियो को स्वयं में समाने लगती हूं। *भरपूर हो कर लौट आती हूँ वापिस अपने साकारी ब्राह्मण तन में और अपने प्यारे बाबा से प्रोमिस करती हूं कि देह और देह की दुनिया मे रहते, सबसे तोड़ निभाते, मम्मा बाबा को फॉलो कर उनके समान बनने का तीव्र पुरुषार्थ मैं अभी से ही अवश्य करूँगी*।

———————————————

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं सदा हजूर को हाजिर समझ साथ का अनुभव करने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं कम्बाइन्ड रूपधारी आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा मन को सदा रूहानी मौज में रखती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा यही जीवन जीने की कला रीति जीती हूँ ।*
✺ *मैं संगमयुगी ब्राह्मण आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ 1. *अभी समय के प्रमाण आप हर निमित्त बनी हुई, सदा याद और सेवा में रहने वाली आत्माओं को स्व परिवर्तन द्वारा विश्व परिवर्तन का वायब्रेशन पावरफुल और तीव्रगति का बढ़ाना है।* चारों ओर मन का दु:ख और अशान्ति, मन की परेशानियां बहुत तीव्रगति से बढ़ रही हैं। *बापदादा को विश्व की आत्माओं के ऊपर रहम आता है। तो जितना तीव्रगति से दु:ख की लहर बढ़ रही है उतना ही आप सुख दाता के बच्चे अपने मन्सा शक्ति से, मन्सा सेवा व सकाश की सेवा से, वृत्ति से चारों ओर सुख की अंचली का अनुभव कराओ।* बाप को तो पुकारते ही हैं लेकिन आप पूज्य देव आत्माओं को भी किसी न किसी रूप से पुकारते रहते हैं। तो *हे देव आत्मायें, पूज्य आत्मायें अपने भक्त आत्माओं को सकाश दो।* साइन्स वाले भी सोचते हैं ऐसी इन्वेन्शन निकालें जो दु:ख समाप्त हो जाए, साधन सुख के साथ दु:ख भी देता है लेकिन दु:ख न हो, सिर्फ सुख की प्राप्ति हो उसका सोचते जरूर हैं। लेकिन स्वयं की आत्मा में अविनाशी सुख का अनुभव नहीं है तो दूसरों को कैसे दे सकते हैं। लेकिन आप सबके पास सुख का, शान्ति का, नि:स्वार्थ सच्चे प्यार का स्टाक जमा है।

➳ _ ➳ 2. जमा की तो खुशी होती है लेकिन खर्च का हिसाब नहीं निकाला तो समय पर धोखा मिल जायेगा। जमा का खाता भी देखो लेकिन साथ-साथ अपने प्रति खर्च कितना किया। *दूसरे को कोई गुण दिया, शक्ति दी, ज्ञान का खजाना दिया वह खर्च नहीं है, वह जमा के खाते में जमा होता है लेकिन अपने प्रति समय प्रति समय खर्च किया तो खाता खाली हो जाता है।* इसीलिए अच्छे विशाल बुद्धि से चेकिंग करो।

✺ *ड्रिल :- "विश्व की आत्माओं को सुख की अंचली का अनुभव कराना"*

➳ ➳ मैं आत्मा इस साकारी शरीर में... भ्रकटी के मध्य में विराजमान

हूँ... *मैं आत्मा चमकता हुआ सितारा हूँ... उड़ चलता हूँ परमधाम की ओर... मेरे प्रेम के... शांति के... सुख के सागर परमपिता परमात्मा शिव बाबा के पास... उनसे शांति की... शक्ति की... प्रेम की... सुख की रंग - बिरंगी किरणें मुझ आत्मा पर पड़ रही है...* और मैं आत्मा इन शक्तियों से भरपूर हो रही हूँ... मुझ आत्मा के चारों ओर एक शक्तिशाली... आभामंडल बन गया है... जिसका प्रभाव दूर - दूर तक फैल रहा है... अब मैं आत्मा वापस उड़ कर पहुँच जाती हूँ... विश्व ग्लोब पर...

➳ _ ➳ मैं आत्मा सुख - शांति का फरिश्ता... विश्व के ग्लोब पे विराजमान हूँ... मुझ आत्मा से सुख - शांति और शक्ति की किरणें... निरंतर प्रवाहित हो रही है... *मुझ आत्मा के सम्मुख... विश्व की समस्त दुखी, अशांत और पीड़ित आत्माएँ विराजमान है... और मैं आत्मा इन सब आत्माओं को... सुख की अंचली का अनुभव करा रही हूँ...* सबके दुख दूर कर... सुख का अनुभव करवा रही हूँ... *रहम दिल बाप की... मैं मास्टर रहम दिल संतान... सबकी पीड़ा दूर कर रही हूँ...*

➳ _ ➳ *अभी समय के प्रमाण मैं निमित्त बनी हुई आत्मा... सदा याद और सेवा में रहने वाली आत्मा... स्व परिवर्तन द्वारा विश्व परिवर्तन करने के लिए... पावरफुल वायब्रेशन तीव्रगति से फैला रही हूँ...* मुझ आत्मा के इस वाइब्रेशन के संपर्क में... जो भी आत्मा आ रही है... वो स्वतः ही परिवर्तित हो रही है... और अपने परमपिता की ओर आकर्षित हो रही है...

➳ _ ➳ मैं आत्मा बापदादा से प्राप्त सुख - शांति की शक्तियों को... सारे विश्व में फैला रही हूँ... *विश्व में तीव्रगति से फैल रही दु:ख की लहर को समाप्त करने के लिए... मैं आत्मा सुख दाता की संतान... अपनी मन्सा शक्ति से... मन्सा सेवा से... सकाश की सेवा से... और वृत्ति से चारों ओर सुख की अंचली का सब आत्माओं को अनुभव करा रही हूँ...* मैं पूज्य ईष्ट देवी अपने भक्तों को सुख शांति के वाइब्रेशन दे रही हूँ... उनको वरदानों से भरपूर कर उनका उद्धार कर रही हूँ...

➳ ➳ *साइन्स की इन्वेन्शन से निकले साधन... सुख के साथ दुख भी

देते हैं... लेकिन मुझ आत्मा के पास परमात्मा से प्राप्त... सच्चा सुख का... शान्ति का... नि:स्वार्थ प्रेम का स्टॉक जमा है... जो सभी आत्माओं को सच्चा सुख और शांति का ही अनुभव करवा रहा है... मैं आत्मा इन जमा शक्तियों को... सर्व आत्माओं के कल्याण के लिए यूज कर रही हूँ... दूसरे को कोई गुण दिया... शक्ति दी... ज्ञान का खजाना दिया... वह खर्च नहीं है... वह जमा के खाते में जमा होता है... लेकिन अपने प्रति समय प्रति समय खर्च किया तो खाता खाली हो जाता है...* इसीलिए अब मैं आत्मा विशाल बुद्धि से चेकिंग कर... इन खजानों को... बापदादा के बताये अनुसार विश्व कल्याण अर्थ यूज करती हूँ...

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔